एन्टीबायोटिक, दस्तरोधी व बुखार कम करने की दवा लगवाकर उपचार करें।

**पी. पी. आर के लक्षण**

इस बीमारी के लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सालय / पशु चिकित्सक से संपर्क करें।


आलेखः-
डॉ0 सरोज कुमार रजक
डॉ0 पंकज कुमार
डॉ0 पुष्पेन्द्र कु0 सिंह
वैज्ञानिक, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना



प्रकाशकः-
डॉ. ए. के. ठाकुर
निदेशक प्रसार शिक्षा
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के द्वारा प्रकाशित


बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

# पी.पी. आर (बकरी प्लेग)

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

# पी.पी.आर (बकरी प्लेग)

यह विषाणुजनित रोग भेड़ एवं बकरियों में पाया जाता है। भेड़ों की अपेक्षा बकरियाँ इस रोग से अधिक प्रभावित होती है। छुआछुत से फेलनेवाले रोग के विषाणु स्वस्थ पशु के रोगी पशु के सम्पर्क में आने से तथा रोगी पशु द्वारा उत्सर्जित मल-मुत्र तथा संदूषित चारे-पानी से फैलते हैं। रोग का प्रकोप बहुधा वर्षा ऋतु में होने की संभावना अधिक रहती है।

### लक्षण

- तीव्र बुखार।
- मुंह मसूडे एवं जीभ पर घाव (छाले या अलसर)।
- नाक से स्त्राव बहना जो बाद की अवस्था में मवादयुक्त होकर नासिका को अवरूद्धकर देता है जिससे पशु मुंह से सांस लेने लगता है।
- आँखों से पानी बहना, उनमें सूजन आ जाना व झिल्ली का रंग गहरा लाल हो जाना।
- खांसी व निमोनिया होना।
- पशु को तीव्र बदबूदार दस्त होने से शरीर में पानी का कम होना शामिल है।
- इस रोग मे मृत्युदर लगभग 55-84 प्रतिशत तक पाई जाती है।

### संचरण और फैलाव

- भेड़ों की अपेक्षा बकरियाँ इस रोग से अधिक प्रभावित होती हैं।
- संक्रमित पशुओं के साथ सम्पर्क में आना।
- दूषित जल और चारा खाने से।
- दूषित हवा में साँस लेने से।
- पशु हाट।

### रोकथाम

- रोगी पशु को स्वस्थ्य पशु से अलग कर देना चाहिए।
- नियमित रूप से साफ- सफाई करना जरूरी है।
- चार माह से अधिक आयु वाले पशुओं का पी.पी. आर का टीकाकरण आवश्यक रूप से नवम्बर से फरवरी माह के बीच करवाएं। प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार टीकाकरण से रेवड़ में रोग के विरूद्ध प्रतिरोधकता बनी रहती है।
- बीमार पशु को पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार